

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : R/J/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक:- प्रतिदिन

● मुद्रण तारीख - 23-03-2016 ● अंक-472 ● तारीख - 24 मार्च 2016, चैत्र कृष्ण - 1 ● गुरुवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसाई - अनमोल वचन



अध्यापक वे मूर्तिकार हैं जो चट्टानों को सौन्दर्य और महत्व की वस्तुओं में परिणत कर देते हैं। वे बालकों की प्रकृति, स्वभाव और साज-सज्जा का अध्ययन करते हैं तथा समाज में उनकी भूमिका सुनिश्चित करते हैं, उनकी उन्नति का मार्ग और उसके पड़ाव सुनिश्चित करते हैं।—सत्य साई बाबा

रहीमदास जी के दोहे

तरुवर फल नहीं खाते हैं, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।

अर्थ: वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते हैं और सरोवर भी अपना पानी स्वयं नहीं पीती है। इसी तरह अच्छे और सज्जन व्यक्ति वो हैं जो दूसरों के कार्य के लिए संपत्ति को संचित करते हैं।

चटक रहीं बागों में कलियाँ - कविता

चटक रहीं बागों में कलियाँ,
पंछी करते हैं अटखेलियाँ।
ग्वाल चले सब गायें लेकर,
बालक पढ़ते हैं मन देकर।
महक रही है खूब चमेली,
भौरे आए जान अकेली।
सूरज ले किरनों की माला,
निकला सब जग किया उजाला।
ठंडी हवा लगे अति प्यारी,
क्या शोभा देती है क्यारी।
पत्ते यों ओस से जड़े हैं,
जैसे मोती बिखर पड़े हैं।
उठो बालको, हुआ सवेरा,
दूर करो आलस का डेरा।
मुँह धोओ, थोड़ा कुछ खाओ,
फिर पढ़ने में ध्यान लगाओ!

शराब की हानियाँ

पाचन तंत्र पर प्रभाव :-
शराब से पाचन-क्रिया मन्द हो जाती है इससे अमाशय में सूजन आती है तथा कब्ज होती है अमाशय में लगातार सूजन होने से वह अल्सर में बदल जाती है।

लीवर पर प्रभाव :-
इससे लीवर पर सूजन/फेटी लीवर हो जाता है या लीवर सिकुड़कर रेंट जाता है अधिक शराबियों का लीवर बढ़ जाता है तथा लीवर सिरोसिस या हैपेटाइटिस-सी नामक रोग होकर व्यक्ति की मौत भी हो सकती है।

गुर्दे पर प्रभाव :-
शराब से गुर्दों की कोशिकायें मृत (डैड) होने लगती हैं। वे रक्त को शुद्ध करना बन्द कर देती हैं, गुर्दे सिकुड़कर छोटे हो जाते हैं।

हार्ट पर प्रभाव :-
शराब से हार्ट की नस-नाड़ियाँ संख्त हो जाती हैं, नाड़ियाँ फैल जाती हैं उनके अन्दर ब्लॉकेज आती है जिससे पहले स्थाई ब्लड-प्रेसर तथा बाद में कभी हार्ट अटैक हो सकता है। यह मिथ्या धारणा है कि थोड़ी मात्रा में शराब हार्ट के रोगियों के लिए लाभदायक है।

मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव :-
मस्तिष्क में भ्रम की स्थिति पैदा होती है निर्णय क्षमता खत्म होकर वाणी पर, व्यवहार पर, आचरण पर मस्तिष्क का नियन्त्रण समाप्त हो जाता है।

शरीर पर अन्य प्रभाव :-
शराब पीने से कैंसर पैदा होने की सम्भावना कई गुणा बढ़ जाती है। असमय बुढ़ापा आता है, चेहरे पर झुर्रियाँ आती हैं। शराबी व्यक्ति का मस्तिष्क पर नियंत्रण न होने से वह आत्म-हत्या भी कर लेता है।



सुप्रीम कोर्ट ने - सरकारी विज्ञापनों में राज्यपाल और सीएम की फोटो लगाने की इजाजत दी

सुप्रीम कोर्ट ने सरकारी विज्ञापनों में फोटो लगाने के अपने पहले के फैसले को बदल दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अब सरकारी विज्ञापनों में राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों आदि की फोटो भी सरकार लगा सकती है। कोर्ट ने पहले के आदेश में बदलाव कर सरकारी विज्ञापनों में सीएम, राज्यपाल के अलावा कैबिनेट मिनिस्टर्स की फोटो लगाने को इजाजत दे दी। गौरतलब है कि कोर्ट ने सरकारी विज्ञापनों में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया के अलावा किसी और नेता या मंत्री की तस्वीर लगाने पर पिछले साल रोक लगा दी थी।



असाधारण सामर्थ्य

बहुमूल्य सम्पदाएँ पृथ्वी की गहराई में दबी पड़ी हैं। खनिज, कोयला, लोहा, सोना को प्राप्त करने के लिए भूमि को गहरा खोदना पड़ता है। इतने श्रम के उपरान्त ये वस्तुएँ प्राप्त हो पाती हैं। मोती सामान्य नदी-नालों नहीं समुद्र की गहराई में पाया जाता है। दुस्साहसी उन्हें करतलगत करने के लिए जीवन की बाजी लगा देते हैं। उथले पानी का पर्यवेक्षण करने वाले मछुआरे तो मछलियाँ ही प्राप्त कर पाते हैं। समुद्र के किनारे खड़े रहने वालों के हाथ पत्थर और बालू ही आता है। कीमती वस्तुओं की उपलब्धि के लिए अभीष्ट मात्रा में पुरुषार्थ की



आवश्यकता पड़ती है और उसी अनुपात में साहस एवं मनोयोग की भी। प्रकृति की व्यवस्था भी कुछ

समुद्र के धरातल में छिपाकर रखा है। ताकि पुरुषार्थ से हीन, आलसी और अकर्मण्य व्यक्ति उन्हीं न प्राप्त कर सकें। मनुष्य शरीर को परमात्मा की सर्वोत्तम कृति माना गया है। सर्वोत्तम इन अर्थों में कि इसके विकास की असीम सम्भावनाएँ हैं। काया के अन्तरंग में शक्ति के स्रोत छिपे पड़े हैं। उन्हें जगाया एवं उपयोग में लाया जा सके तो मनुष्य असाधारण सामर्थ्य का स्वामी बन सकता है। अन्तःशक्ति स्रोतों को जगाने के लिए भी असाधारण साहस जुटाना पड़ता है। कठोर साधना पुरुषार्थ का परिचय देना होता है।

सुनने की क्रिया इस प्रकार पूर्ण होती है

आवाज की तरंगें जो वायुमण्डल में उत्पन्न होती हैं, ये कान के बाहरी भाग कर्ण शुष्कली में एकत्रित हो जाती हैं। ये तरंगें श्रवण नलिका द्वारा कर्ण पटल से जा टकराती हैं जिससे कर्ण पटल में कम्पन या गति उत्पन्न होती है। कर्ण पटल का सम्बन्ध मध्य-कर्ण से होता है। मध्य कर्ण में

कम्पन होने से मध्य-कर्ण की वायु में थरथराहट उत्पन्न हो जाती है। फिर ये आवाज की तरंगें मध्य कर्ण की तीन छोटी-छोटी अस्थियों (मुद्गरस्थि, नेहाइ और रक्तावस्थि) को कँपा देती हैं। इन तीनों अस्थियों को कँपाकर, आवाज की तरंगें, झिल्ली निर्मित घोंघाकार कर्ण में होती हुई

पहले कोकिलिया फिर श्वास नाड़ी से जा टकराती हैं, जिससे वात संवेदना उत्पन्न होती है। वात संवेदना वृहदमस्तिष्क के श्रवण केन्द्र में चला जाता है, जिससे श्रवण क्रिया सम्पादित होती है। उपर्युक्त प्रक्रिया द्वारा ही मानव को शब्द सुनाई देते हैं। यदि उपर्युक्त वर्णित



अंगों में से कोई भी अंग विकृत हो जाये तो इसके परिणामस्वरूप ठीक प्रकार से सुनना असम्भव हो जायेगा।

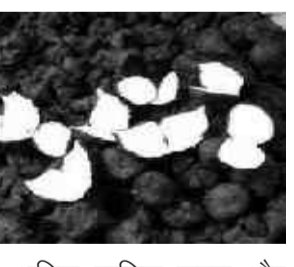
सिंघाड़ा के फायदे

पानी में उगने वाला सिंघाड़ा सेहत के लिए पौष्टिकता से भरपूर होता है। इतना ही नहीं, यह कई बीमारियों में भी फायदेमंद साबित होता है।

पानी में पैदा होने वाला तिकोने आकार का फल है सिंघाड़ा। इसके सिर पर सींग की तरह दो कांटे होते हैं, जो छिलके के साथ होते हैं। तालाबों तथा रुके हुए पानी में पैदा होने वाले सिंघाड़े के फूल अगस्त में आ जाते हैं, जो सितम्बर-अक्टूबर में फल का रूप ले लेते हैं। छिलका हटाकर जो बीज पाते हैं,

वही कहलाता है सिंघाड़ा। इस जलीय फल को कच्चा खाने में बड़ा मजा आता है। सिंघाड़ा अपने पोषक तत्वों, कुरकुरेपन और अनूठे स्वाद की वजह से खूब पसंद किया जाता है।

फलाहार में होता है शामिल व्रत-उपवास में सिंघाड़े को फलाहार में शामिल किया जाता है। इसके बीज को सुखाकर और पीसकर बनाए गए आटे का सेवन किया जाता है। असल में एक फल होने के कारण इसे अनाज न मान कर फलाहार का दर्जा दिया गया है। यूं तो सिंघाड़े को कच्चा ही खाया जाता है, लेकिन कुछ लोग इसे हल्का उबालकर नमक के साथ खाते हैं। सिंघाड़े से साग-सब्जी और बर्फी, हलवा जैसे मिष्ठान भी बनते हैं, जो अनोखा स्वाद लिए होते हैं। पौष्टिकता से भरपूर सिंघाड़े में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन बी व सी, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस जैसी विभिन्न रस, रायबोफ्लेविन जैसे तत्व पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। आयुर्वेद में कहा गया है कि सिंघाड़े में भैंस के दूध की तुलना में 22 प्रतिशत



अधिक खनिज लवण और क्षार तत्व पाए जाते हैं। वैज्ञानिकों ने तो अमृत तुल्य बताते हुए इसे ताकतवर और पौष्टिक तत्वों का खजाना बताया है। इस फल में कई औषधीय गुण हैं, जिनसे शूगर, अल्सर, हृदय रोग, गठिया जैसे रोगों से बचाव हो सकता है। बुजुर्गों व गर्भवती महिलाओं के लिए तो यह काफी गुणकारी है।

श्वसन

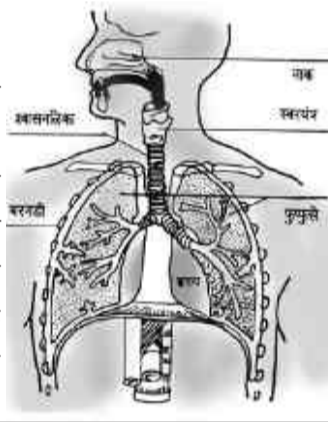
श्वसन लेख में मानव शरीर से संबंधित उल्लेख है। समस्त जीवधारियों को अपनी जैविक क्रियाओं के संचालन हेतु ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह ऊर्जा सजीवों के शरीर की सभी जीवित कोशिकाओं में ऑक्सीजन द्वारा भोज्य पदार्थों के ऑक्सीकरण से उत्पन्न होती है और संचित हो जाती है।

श्वसन के प्रकार :- भोज्य पदार्थों (मुख्यतः ग्लूकोज) के अपघटन के आधार पर श्वसन निम्नलिखित दो प्रकार का होता है—

अवायवीय या अनाेक्सी श्वसन :- कुछ निम्नकोटि के जीवों, परजीवी जीवों, यीस्ट तथा कुछ जंतु ऊतकों में ऊर्जा की प्राप्ति हेतु ग्लूकोज का लैक्टिक अम्ल या एथिल अल्कोहल में अपघटन होता है। इसमें ऑक्सीजन का उपयोग नहीं होता है, इसलिए इसे अनाेक्सी श्वसन कहते हैं। रासायनिक स्तर पर इसे शर्करा का किण्वन कहते हैं। इस क्रिया में ग्लूकोज के एक अणु से 21-28 किलो कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। उत्पादित पदार्थों में कार्बन डाई ऑक्साइड तो बाहर निकल जाती है तथा एथिल अल्कोहल कोशिकाओं में रह जाता है।

वायवीय या ऑक्सी श्वसन :- यह उच्चकोटि के जीवों में होता है। इसमें वातावरण से ऑक्सीजन ग्रहण की जाती है, जो कोशिकाओं में ऊर्जा उत्पादन के लिए ग्लूकोज का ऑक्सीकरण करती है। इसके फलस्वरूप कार्बन डाई ऑक्साइड तथा जल उत्पन्न होते हैं। इसमें ऑक्सीजन का व्यय होता है जिसे जीव अपने वातावरण से लेता है और बदले में कार्बन डाई ऑक्साइड वातावरण से मुक्त कर देता है। इसे गैसीय विनिमय कहते हैं।

चूँकि इसमें ऑक्सीजन का उपयोग होता है, इसलिए इसे ऑक्सी श्वसन कहते हैं। यह क्रिया दो चरणों में पूरी होती है, जिन्हें क्रमशः ग्लाइकोलिसिस तथा क्रेब चक्र कहते हैं।



मानव मन के बोल

ईमानदारी रूपी हीरा



गतांक से आगे.....
हर बालादेवी की मूरत-बच्चा बच्चा राम है। पाली-मारवाड में, तो मैंने उनको अन्दर बुलाया उनको जलपान कराया, उनको बहुत धन्यवाद दिया। भाई आप इतने ईमानदार हैं। वास्तव में आप 150/- रुपया लाकर नहीं देते, देखो आप घर से वापस आये हो, ये ऐसा मेरा राष्ट्र होना चाहिये। मेरा भारत विश्व गुरु, तो मैंने उनका आदर प्रकट किया। तो मैंने उन बाबू जी को कहा तो बोले धन्यवाद देने की फूसत ही नहीं थी मेरे को। उनको धन्यवाद देने की फूसत नहीं। कहां खो गये कहां भटक गये?

एक बार की बात है ये बातें में अपने जीवन के अनुभव की बता रहा हूँ। महानुभाव कई मुझे ऐसे मिले जिन्होंने मुझे अच्छे - अच्छे पाठ पढ़ाये।

मुझे कहा कैलाश जी आज आप 4.15 बजे आओ सुबह 4.00 बजे आना चाहिये आप डेली के बाबू हो, आगे समय के महत्व को समझना, समय रूपी हीरा।

अरे महाराज कुछ दोहा लिखवा दो, कुछ चौपाइयाँ लिखवा दो। मैं तो नहीं बना पाया, हमारे बंशी जी बावरा साहब बहुत बनाते हैं। रहिम दास जी का दोहा -

**रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।**

रहीमा जुड़े गाँठ पड़ जाय।।

प्रेम को कम मत कीजिये, जब आप किसी से कुछ भी व्यवहार करे, तो सोचिये 30 साल से उनका मेरे पर उपकार है। जब मेरे पास 5/- रुपये नहीं थे। जब मेरा सिर दर्द हो रहा था बहुत जोर से, एनासिन की गोली खरीद ली थी। उस समय ये गोली बहुत चलती थी। अभी तो बुखार के लिये पेरसिटामोल, पैनकीलर चलती है पर कम से कम प्रयोग करना चाहिये।

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

समय अपनी गति से निरन्तर चल रहा है या यूँ कहे कि वह तेज गति से भाग रहा है। निरन्तर गतिमान इस समय के साथ कदम मिलाकर चलने पर ही मानव जीवन की सार्थकता है। इसके साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। पिछड़ना सफलता से दूर हटना है, उसकी ओर गतिशील होना नहीं।

जीवन में वही मनुष्य सफल है, जो समय के साथ चलता है। कुछ लोग तो ऐसे दूरदर्शी होते हैं, जो अपने आने वाले समय को पहले ही भाँप लेते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी योजना पहले ही बना लेते हैं तथा प्रत्येक कसौटी पर सफल होते हैं। मनुष्य को समय के साथ आगे बढ़ते हुए अपना काम पूरा करते रहना चाहिए। कल के भरोसे काम को छोड़ना समस्याओं को आमंत्रित करना है। जिस व्यक्ति ने समय की उपयोगिता को समझ लिया है, वह सफलता को अवश्य हासिल करता है।

प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिनचर्या की समय सारिणी अथवा तालिका को बनाकर उसका पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जिस व्यक्ति ने अपने समय का सही उपयोग करना सीख लिया, उसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं है। कुछ लोगों को अकर्मण्य रहकर निठल्ले समय बिताना अच्छा लगता है। वे अकर्मण्यता और आलस्य को समय की कमी के बहाने छिपाते हैं।

समय को जिन्दगी के समान माना गया है, कहते हैं कि अगर आप समय को बर्बाद कर रहे हैं तो जिन्दगी को बर्बाद कर रहे हैं, अगर आप समय का अच्छा प्रयोग कर रहे हैं तो अपनी जिन्दगी को अच्छा बना रहे हैं।

समय को भगवान की बनाई हुई इस सृष्टि में सबसे बलवान माना गया है, जब ये बदलता है तो इंसान को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है। व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जिनसे उसके भाग्य का बनना और बिगड़ना तय होता है। अगर व्यक्ति ने समय की सही दिशा या गति को समझ लिया, तब तो वह सफल हो गया, अन्यथा उसके हाथ केवल असफलता ही लगेगी।

प्रकृति में प्रत्येक वस्तु का समय निश्चित है। यदि प्रकृति भी आलसी और अकर्मण्य लोगों की भाँति कार्य करना बन्द कर दे तो सम्पूर्ण सृष्टि का समय चक्र बदल जाएगा तथा प्रकृति विनाश की ओर आरूढ़ हो जाएगी। यदि विद्यार्थी केवल परीक्षा के समय परिश्रम करेगा और शेष दिन आराम करेगा तो उसे वांछित सफलता नहीं मिल सकती। अतः हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का सबसे बड़ा नियामक घटक समय ही है।

हीपा के दल ने किया नारायण सेवा का अवलोकन



उदयपुर। हरियाणा इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनीस्ट्रेशन (हीपा) गुडगांव के 45 सदस्यीय प्रशिक्षुओं के दल ने नारायण सेवा संस्थान के सेवा प्रकल्पों व प्रबन्धकीय कार्य प्रणाली का अवलोकन एवं अध्ययन किया। दल संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल व निदेशक वंदना अग्रवाल से भी मिला और संस्थान की देशव्यापी सेवाओं की जानकारी प्राप्त की।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
25.	सालहा खातून	रहावर मियां	5	स्त्री	जमुई	बिहार
26.	सूरज यादव	सोपी यादव	6	पुरुष	भागलपुर	बिहार
27.	गनिता महतो	धर्म महतो	6	स्त्री	पटना	बिहार
28.	सत्यम कुमार	रामपाल	6	पुरुष	झॉसी	उत्तरप्रदेश
29.	औवेश अहमद	मतलूब तेली	6	पुरुष	सहारनपुर	उत्तरप्रदेश
30.	हंसमुख कुमार	धुरी पासवान	6	पुरुष	बेतिया	बिहार
31.	चन्द्रशेखर चमार	रमाशंकर	6	पुरुष	ईलाहाबाद	उत्तरप्रदेश
32.	अमित कुमार	मनोज कुमार	7	पुरुष	औरंगाबाद	बिहार
33.	आलम शेख	नसीम राजा	7	पुरुष	बलरामपुर	उत्तरप्रदेश
34.	गोलू कुमार	धर्मन् राजवंशी	8	स्त्री	गया	बिहार

अशोक स्तंभ

अशोक स्तंभ उत्तर भारत में मिलने वाले शृंखलाबद्ध स्तंभ हैं। इन स्तंभों को सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल (तीसरी शताब्दी) में बनवाया था। हर स्तंभ की ऊँचाई 40 से 50 फुट है और वजन कम से कम 50 टन है। इन स्तंभों को वाराणसी के पास स्थित एक कस्बे चुनार में बनाया गया था और फिर इसे खींचकर उस जगह लाया गया, जहाँ उसे खड़ा किया गया था। वैसे तो कई अशोक स्तंभों का निर्माण किया गया था, पर आज शिलालेख के साथ सिर्फ 19 ही शेष बचे हैं। इनमें से सारनाथ का अशोक स्तंभ सबसे प्रसिद्ध है। इन स्तंभों में चार शेर एक के पीछे एक बैठे हुए हैं। आज इसे राष्ट्र चिह्न के रूप में अपना लिया गया है। यह चार शेर शक्ति, शौर्य, गर्व और आत्मविश्वास के सूचक हैं। स्तंभ के ही निचले भाग में बना अशोक चक्र आज राष्ट्रीय ध्वज की शान बढ़ा रहा है।



भारत के बारे में रोचक तथ्य

भास्कराचार्य ने खगोल शास्त्र के कई सौ साल पहले पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में लगने वाले सही समय की गणना की थी। उनकी गणना के अनुसार सूर्य की परिक्रमा में पृथ्वी को 365.258756484 दिन का समय लगता है। भारतीय गणितज्ञ बुधायन द्वारा 'पाई' का मूल्य ज्ञात किया गया था और उन्होंने जिस संकल्पना को समझाया उसे पाइथागोरस का प्रमेय करते हैं। उन्होंने इसकी खोज छठवीं शताब्दी में की, जो यूरोपीय गणितज्ञों से काफी पहले की गई थी। बीज गणित, त्रिकोण मिति और कलन का उद्भव भी भारत में हुआ था। चतुष्पद समीकरण का उपयोग 11 वीं शताब्दी में श्री धराचार्य द्वारा किया गया था। ग्रीक तथा रोमनों द्वारा उपयोग की गई की सबसे बड़ी संख्या 106 थी जबकि हिन्दुओं ने 10⁵³ जितने बड़े अंकों का उपयोग (अर्थात् 10 की घात 53), के साथ विशिष्ट नाम 5000 बीसी के दौरान किया। आज भी उपयोग की जाने वाली सबसे बड़ी संख्या टेरा : 10¹² (10 की घात 12) है।

वृद्धों की सेवा और उनकी रक्षा के लिए योजनाएँ

भारत में वृद्धों की सेवा और उनकी रक्षा के लिए कई कानून और नियम बनाए गए हैं। केंद्र सरकार ने भारत में वरिष्ठ नागरिकों के आरोग्यता और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1999 में वृद्ध सदस्यों के लिए राष्ट्रीय नीति तैयार की है। इस नीति का उद्देश्य व्यक्तियों को स्वयं के लिए तथा उनके पति या पत्नी के बुढ़ापे के लिए व्यवस्था करने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसमें परिवारों को अपने परिवार के वृद्ध सदस्यों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करने का भी प्रयास किया जाता है। इसके साथ ही 2007 में 'माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण विधेयक' संसद में पारित किया गया है। इसमें माता-पिता के भरण-पोषण, वृद्धाश्रमों की स्थापना, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था और वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। लेकिन इन सब के बावजूद हमें अखबारों और समाचारों की सुर्खियों में वृद्धों की हत्या और लूटमार की घटनाएँ देखने को मिल ही जाती हैं। वृद्धाश्रमों में बढ़ती संख्या इस बात का साफ सबूत है कि वृद्धों को उपेक्षित किया जा रहा है। हमें समझना होगा कि अगर समाज के इस अनुभवी स्तंभ को यूँ ही नजरअंदाज किया जाता रहा तो हम उस अनुभव से भी दूर हो जाएंगे, जो इन लोगों के पास है।



मुट्टी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे.....

अरे आप रूलाने के लिये नहीं आये। चर्चा हो रही थी कि धर्म क्या है? मनुज जी ने कहा दया धर्म है और कुलदागी के दुष्ट साथियों ने कहा-भोग धर्म है। अरे! कितना भोग भोगोगे? बहुत ज्यादा घी खा लिया तो आप को बी.पी. की शिकायत हो गई, कोलेस्ट्रॉल जम गया, बी.पी. बढ़ गया, साइलेंट हार्ट अटैक आ गया। ये भोग सताते हैं, भोग भोगने के लिये भारतीय संस्कृति में पैदा नहीं हुए। एक डॉ. साहब ने मुझे कहा - कैलाश जी मैं विदेश गया। एक ऐसे देश में गया, जहाँ मैंने पैसा तो बहुत कमाया, इतना पैसा कमाया कि मैं करोड़पति बन गया। बहुत बड़ा हॉस्पिटल बन गया। एक दिन सुबह 11 बजे एक बुजुर्ग आये, मुझ से मिले, मेरे यहाँ भर्ती हुए। बिलखते हुए उन्होंने अपने बेटे का फोन नं. लिखाया नाम लिखाया। तीन दिन मैंने उनका ईलाज किया, चौथे दिन रात्रि में 11 बजे उनका स्वर्गवास हो गया। ईलाज के बावजूद मैं उनको बचा नहीं पाया, क्योंकि उनका कोलेस्ट्रॉल बहुत जम गया था। उनका बी.पी. बहुत हाई था। उनको डायबिटीज बहुत ज्यादा थी, उनको अस्थमा भी था। उनको 36 तरह की बीमारियाँ थी, रात को 11 बजे उन्होंने अन्तिम सांस ली। मैंने उनको बेटे को फोन किया, बहुत बार घण्टी गई, नो रिप्लाई होता गया। बाद में उठाया, बोले - हेलो, कौन बोल रहे हो? डॉ. साहब ने कहा - मैं डॉ. देववत्त बोल रहा हूँ। आप के पूज्य पिताजी रामशरण जी हरिशरण हो गये। उनके प्राण निकल गये, उनका देहान्त हो गया। मेरा हॉस्पिटल इस जगह स्थित है आप आ जाइये। उसने झुंझलाहट में कहा - अरे डॉक्टर, मेरी नींद डिस्टर्ब कर दी, रात को 11 बजे उठाने की क्या जरूरत थी।

वो बूढ़ा आज नहीं तो कल मरता, मेरी नींद क्यों खराब की? ऐसा कहकर फोन रख दिया। डॉक्टर के हाथ सुन हो गये, घर आये अपनी पत्नी को कहा, शर्म आती है। हम दो-चार दिन बाद यहाँ से चले जायेंगे। हम इस देश में नहीं रहेंगे, जहाँ का बेटा बाप के लिये ऐसे शब्द का प्रयोग करता है। मुझे भारत चाहिये, मुझे गंगा चाहिये, मुझे यमुना नदी चाहिये, मुझे कावेरी माता चाहिये, मुझे अयोध्या की जरूरत है, मुझे काशी जाना है, मुझे सोमनाथ के दर्शन करने हैं। मैं भुवनेश्वर जाऊँगा, कोणार्क सूर्य मंदिर के दर्शन करूँगा। मुझे अपने भारत जाना है।

हम उस देश के वासी हैं,

जिस देश में गंगा बहती है।

होंठों पर सच्चाई रहती है,

जहाँ दिल में सफाई रहती है।

हम उस देश के वासी हैं,

जिस देश में गंगा बहती है।

आप को मानवता की रक्षा करना। ये धन, ये सामग्री, ये मस्तिष्क फाइबर का बना हुआ है। फाइबर जड़ है, ये टूट भी गया तो ये 500/- रुपये में दूसरा आ जायेगा लेकिन व्यक्ति को मत टूटने देना बाबू.। चेतन का अपमान मत करना, इन्सानियत का अपमान मत करना, अपनी नारी शक्ति को लजाना मत। बाबूड़ा भगवान का रूप है।

क्रमशः

मुनव्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
अलायक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी
अंपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी
अंपादन सल्लोगी-धनश्याम त्रिठ नठौट

सत्संग
चैनल पर सीधा प्रसारण

सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर
सहायताार्थ

भजनसत्संग एवं मानव मन के बोल

दिनांक 28 से 30 मार्च 2016

समय :
सांय : 07.00 से रात्रि : 10.30 बजे तक
स्थान
सेवामहातीर्थ लियो का गुड़ा, बड़ी, उदयपुर (राज.)

कथा व्यास भ्रम पुज्य कैलाश जी 'मानव'
व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर 'भजनसत्संग एवं मानव मन के बोल' का श्रवण लाभ उठावें।

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

कैलाश "मानव" चैयरेन संस्थापक नारायण सेवा संस्थान	कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान
जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान	देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान		

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी...
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।